कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, अप्रैल 2024 | वर्ष 2, अंक 8, पृष्ठ 4



राम लाल आनंद महाविद्यालय में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित समारोह के बीच महिला शिक्षिकाओं के साथ प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता।

सुख देती है लड़कियों की कामयाबी

रामलाल आनंद महाविद्यालय में महिला दिवस पर हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों के महिला केंद्रित नाटक ने लोगों के दिल को छुआ

कंचन गुप्ता

नई दिल्ली। माताओं के प्यार और बहनों के योगदान को ध्यान में रखकर आज उनको धन्यवाद ज्ञापन करने का दिन है। आज का दिन नारियों के सम्मान का दिन है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'संसृष्टि' समारोह में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कही। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित समारोह में प्राचार्य ने शिव के अर्धनारीश्वर रूप को रेखांकित करते हुए नारी शक्ति पर विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि 1964 में महाविद्यालय में 20 फीसदी महिलाओं की भूमिका होती थी, जो आज 45 से 50 फीसदी तक पहुंच गई है। महाविद्यालय के टापर्स की सूची देखता हूं तो लड़कियों की बहुतायत संख्या सुख देती है। बोर्ड परीक्षाओं में लड़कियों के बेहतरीन प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कहा कि समाचार पत्रों की पहली हेडलाइन लड़कियों के नाम की होती है।

प्राचार्य ने महिला शिक्षकों को पुष्प देकर सम्मानित किया। साथ ही जेंडर सेंसटाइजेशन कमेटी अस्मि के विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शिक्षिका प्रो. प्रेरणा दीवान ने कहा कि एक मां के गर्भ धारण के नौ महीनों को तो रेखांकित किया जाता है, लेकिन नौ महीनों के बाद उसे एक नागरिक बनाने में जो योगदान होता है उसे भी ध्यान देने की जरूरत है। प्रो. मुक्ता मजुमदार ने सभी क्षेत्र में जागरूकता लाने पर बल दिया। प्रो. अर्चना गौड़ का कहना था कि सभी क्षेत्रों में संतुलन बिगड़ गया है। यह संतुलन कैसे कायम रह सकता है, इसे उन्होंने अपनी कविता के जरिए प्रस्तुत किया। प्रो. श्रुति आनंद 'अस्मि' में कार्य करने के तरीके और उस दौरान हुए अपने तीन वर्ष के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने अपनी बात यह कहकर समाप्त की कि समानता तभी आएगी जब महिलाएं सभी चीजों में बराबरी पर आएंगी। प्रो. संजय कुमार शर्मा ने कहा कि हमारी



संस्कृति नारी पूजने की रही है। क्या नारी के बिना इस संसार की कल्पना की जा सकती है? लड़कों को संवे. दनशील बना दिया जाये तो काफी हद तक स्थितियां सुधर सकती हैं।

इससे पहले हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने सभी लोगों का स्वागत करते हुए पूरे आयोजन की रूपरेखा रखी। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर को याद कर स्त्री शक्ति पर विचार रखते हुए कहा कि स्त्री पुरुष एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि साथी हैं। वेस्टर्न डांस समिति इल्यूजन ने प्रस्तुति से आयोजन में रंग भरा। दस्तूर ने नारी को संबोधित करते हुए प्रस्तुति दी। जेंडर सेंसटाइजेशन समिति अस्मि, वेस्टर्न डांस समिति इल्यूजन, इंडियन म्यूजिकल समिति दस्तूर और फाइन आर्ट समिति इनारा के सहयोग से समारोह को आयोजित किया गया। महाविद्यालय के रोज गार्डन में लगाई गई महिला केन्द्रित फोटो प्रदर्शनी को लोगों ने निहारा। इसी के साथ हिंदी पत्रकारिता के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने नारी केन्द्रित अपने नाटक से लोगों का दिल जीता। आर्यन के निर्देशन में जया, शिवम, रोहित, खुशी शाक्य, राहुल, अंशिका, सोनिका, दिव्या और खुशी चौहान के उम्दा अभिनय ने लोगों को भावुक कर दिया।

शिक्षिकाओं के मध्य म्यूजिकल चेयर की प्रतियोगिता में कई रंग देखने को मिले, जिसमें विजेता का पुरस्कार प्रो. मुक्ता मजुमदार को मिला। कॉमन म्यूजिकल चेयर के विजेता डॉ. राजेश कुमार गौतम रहे। अन्य गतिविधियों में रोटी बनाने की प्रतियोगिता, हेयर ब्रीडिंग, गेस द ऑब्जेक्ट, फेस पेंटिंग और पीरियड्स क्रैम्प स्टिम्युलेटर भी आकर्षण का केंद्र रहे।

वाद–विवाद करें और कमियों को दूर करें

अरविंद सिंह

नई दिल्ली। वाद–विवाद लोकतंत्र की सेहत के लिए फायदेमंद होता है। साथ ही व्यक्तित्व निर्माण अहम भूमिका अदा करता है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय की आरोह वाद विवाद समिति की ओर से 10 फरवरी को 'प्रबोधन' के तहत आयोजित टर्नकोट प्रतियोगिता में देखने को मिली। इस अंतर महाविद्यालयी प्रतियोगिता में अनेक महाविद्यालयों के 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। आयोजन में विविधता बनी रहे, इसका ध्यान रखा गया। प्रतिभागियों के समक्ष तीन विषय थे, जिसमें से उन्हें किसी एक विषय का चयन कर टर्नकोट प्रारूप में 4 मिनट में अपना वक्तव्य रखना था। तीनों विषय रोचक थे और उतनी ही रोचकता से प्रतिभागियों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

हिंदी विभाग के शिक्षक डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. एनी रे और डॉ. सोमा पटनायक ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया किरोड़ीमल कॉलेज के शशांक गुप्ता ने। द्वितीय स्थान मोतीलाल नेहरू कॉलेज इवनिंग के राज शेखर एवं तृतीय स्थान आत्माराम कॉलेज की रत्ना कुमारी ने हासिल किया।

तीनों विजेताओं को राम लाल आनंद महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने पुरस्कृत किया। साथ ही उन्होंनेक प्रतिभागियों से आगे भी प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़ कर भाग लेने की बात कही। डॉ. रोशनलाल मीणा ने प्रतिभागियों के वक्तव्यों की अच्छाइयों और कमियों को इंगित किया। साथ ही भविष्य में इन कमियों को दूर करने का प्रयास करने की बात कही।

विद्यार्थियों ने जाना, मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे रहें

जया सिंह

नई दिल्ली। आज के समय में सभी मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं के लक्षणों को खुद में महसूस कर रहे हैं, किन्तु इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि आप मानसिक बीमारी का शिकार हैं। यह बात एम्स की डॉ. अमन दुआ ने 6 फरवरी को राम लाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग व शारीरिक शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित सेमिनार में कही।

युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य विकास के लिए कार्य कर रही डॉ. अमन दुआ ने अलग–अलग तरीकों से विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य तथा उसके परिणामों के बारे में समझाने का प्रयास किया। विद्यार्थियों को गूगल फॉर्म के जरिए सर्वे का हिस्सा बनाया गया। इसमें मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए थे। सेमिनार के दौरान वक्ता ने स्वस्थ मानसिक स्वास्थ्य के लिए क्या–क्या करना चाहिए, उसके बारे में बिन्दुवार बताया। डॉ. अमन ने मानसिक रूप से पीड़ित विद्यार्थियों के लिए प्रा. फेशनल की मदद का क्या महत्त्व है, इसके बारे में जानकारी दी। इसका उद्देश्य विद्यार्थी कहीं मानसिक पीड़ा से तो नहीं जूझ रहे, यह जांचना था। सबसे ज्यादा मानसिक तनाव के लक्षण 18 से 25 वर्ष के लोगों में होते हैं। इस पर किस प्रकार अंकुश लगा सकते हैं, कैसे बाहर निकल सकते हैं, इसके बारे में बताया।

वार्षिकोत्सव में गणित के विभिन्न आयामों पर चर्चा

अभिषेक चौहान

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के गणित विभाग की समिति इनफिनिटी ने वार्षिक इंप्लोजन का आयोजन किया। इसमें गतिशील प्रणाली के माध्यम से यात्रा विभाजन, अराजकता और विकासवादी मॉडल पर चर्चा हुई। डॉ. सचिन कुमार इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता थे। डॉ. सचिन कुमार ने गणितीय मॉडलिंग के बारे में बताया कि यह किस प्रकार कार्य करती है। प्रणाली में गुणात्मक और मात्रात्मक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए गणित को प्रकृति की विभिन्न प्रणालियों पर लागू किया जा सकता है। साथ ही उन्होंने गैर रेखीय प्रणाली की स्थिरता पर 'हार्टमैन–ग्रोबमैन थेओरेम' पर चर्चा की। वार्षिकोत्सव में अनेक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने अनुसंधान में गणितज्ञों की संभावनाएं या वास्तविक जीवन में गणितज्ञों का अनुप्रयोग विषय पर प्रस्तुति दी। इसमें जीनत



इंप्लोजन के समापन के बाद गणित विभाग के शिक्षक और विद्यार्थी।

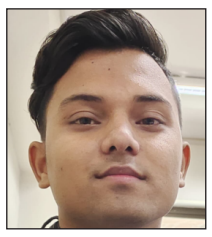
प्रथम, तनिष्क ने दूसरा और अविनाश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। सोचो या डूबो नाम से क्विज प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें टीम महतो ने प्रथम, टीम कोमल ने द्वितीय और टीम गोपाल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। मैथमेज नाम से ट्रेजर हंट प्रतियोगिता हुई, जिसे टीम कॉसमॉस ने जीत लिया। टीम राजनीति विज्ञान को दूसरा स्थान हासिल हुआ।

गणितीय तम्बोला प्रतियागिता में ब्रजेश किशोर मिश्रा ने जीत हासिल की। तनिष्क दूसरे और प्रियंका शर्मा तीसरे स्थान पर रहीं। समारोह के अंत में सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया गया। आयोजन में विभाग के प्रभारी डॉ. बसंत कुमार मिश्रा, समिति के संयोजक डॉ. संदीप भट्ट, डॉ. पवन कुमार सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे। समिति अध्यक्ष प्रखर सिंह ने सभी का आभार प्रकट किया।

नई चीजें सीखने को मिली

ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' में संपादक के रूप में काम करना मेरे लिए बहुत ज्ञानवर्धक रहा। जब आपको किसी काम को करने में मन लगने लगता है तो आप उस कार्य का आनंद लेने लगते हैं। कुछ ऐसा ही मेरा अनुभव रहा, लेकिन इस काम में अनेकों चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। इस कार्य का उद्देश यही है कि आप सभी चुनौतियों का सामना और सभी चीजों को व्यवस्थित करना सीखें। कभी कभी खबरें आने में विलंब हुआ।

इसके बाद इस न्यूज लेटर के परामर्शदाता और हमारे अध्यापक डॉ. अटल तिवारी ने सहायता की। उन्होंने प्लान बी के बारें में बताया और कहा जब आप किसी को रिपोर्ट के लिए बोलते हैं तब आपको हमेशा संदेह करना है। ऐसे में प्लान बी भी बना कर चलना है। जिस समय मैंने संपादन का काम लिया उस समय मुझे क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर पर काम करना नहीं आता था। लेआउट डिजाइनिंग भी मैंने संपादन का काम लेने के बाद सीखा। अटल सर ने लेआउट और डिजाइनिंग सिखाया। उन्होंने बताया कि न्यूजपेपर बनाने में लेआउट की अहम भूमिका होती है। इस कार्य के माध्यम से मुझे बहुत सारी चीजें सीखने को मिलीं, जो मुझे भविष्य में आगे बढ़ने में मदद करेंगी। यह कार्य करते हुए एक बात सीखने को मिली कि समय का प्रबंधन मीडिया क्षेत्र में अहम है।



संजीव राज

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का यह कदम सराहनीय है कि विद्यार्थी न्यूजपेपर बनाना सीखें। विभाग के विद्यार्थियों के लिए यह लाभदायक है। सभी को एक बार इस कार्य को अवश्य करना चाहिए। अंत में मैं बीजेएमसी विभाग के सभी अध्यापकों एवं साथियों को धन्यवाद कहना चाहूंगा, जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरी इस काम में सहायता की। अंत में यही कहूंगा कि चुनौतियों को चुनौती देकर ही हम रास्ते को आसान बनाकर आगे बढ़ सकते हैं।

कुणाल सिंह को रविन्द्र कालिया कथेतर सम्मान

श्रुति मिश्रा

नई दिल्ली। लेखक कुणाल सिंह को 'अन्य कहानियां तथा झूठ' कहानी संग्रह के लिए रविंद्र कालिया कथा कथेतर सम्मान दिए जाने की घोषणा की गई। यह सम्मान उन्हें 17 मार्च 2024 को कहकशां फाउंडेशन के कहकशां साहित्योत्सव में दिया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन क्रमशः 16 मार्च 2024 को अभिलाषा हॉस्पिटल एवं आईवीएफ के प्रह्लाद नाथ सभागार में हुआ। दूसरे दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज के प्रेक्षागृह में हुए साहित्योत्सव का उद्घाटन वरिष्ठ लेखिका ममता कालिया, ओम निश्चल, हिंदुस्तान अखबार के प्रबंध संपादक और लेखक प्रताप सोमवंशी और आनंद कक्कड़ ने किया।

दूसरे दिन के समारोह में कुणाल सिंह को 'अन्य कहानियां तथा झूठ' के लिए रविंद्र कालिया कथा कथेतर सम्मान से सम्मानित किया गया। उनके इस कहानी संग्रह के संदर्भ में ममता कालिया ने कहा कि हिंदी कहानी नई कलम के हाथों कितनी प्रशस्त हुई है, यह कुणाल सिंह की कहानियों से जाहिर है। जीवन और रिश्तों की सघनता, तन्मयता और तिलिस्म इन कहानियों का प्राणबिंदु है। मौलिकता का जीवंत दस्तावेज हैं यह कहानियां।



कुणाल सिंह चर्चित युवा कथाकार और संपादक हैं। कुणाल सिंह का जन्म 22 फरवरी 1980 को कोलक. ाता के समीपवर्ती एक गांव में हुआ। कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से हिंदी साहित्य में एमए करने के बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम.फिल. की पढ़ाई की।

वरिष्ठ कथाकार और 'तद्भव' के संपादक लेखक अखिलेश कहते हैं कि कुणाल सिंह के पास आख्यान कला का जादू है, ऐसा जादू जो मायाजाल को काटकर हमें सत्य और सौन्दर्य के उजाले में ले जाता है। उनकी कुछ प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार हैं–'सनातन बाबू का दाम्पत्य', 'इतवार नहीं', 'आदिग्राम उपाख्यान', 'उत्तरजीवी' (उपन्यास), 'रोमियो जूलियट और अंधेरा', 'अन्य कहानियां तथा झूठ (कहानी संग्रह)'। प्रमुख भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त इनकी कहानियों के अनुवाद इतालवी और जर्मन भाषा में भी हो चुके हैं।

'आखेटक' कहानी पर फिल्म निर्माण और 'साइकिल' कहानी के कई नाट्य मंचन हो चुके हैं। कुणाल सिंह की कहानियां खूब पढ़ी जाती हैं, लेकिन कॉलेज के दिनों में वह कविताएं भी लिखते थे। साहित्य जगत में पहचान बनाने के लिए बहुत सारे लेखकों की तरह कुणाल को संघर्ष नहीं करना पड़ा। कुणाल सिंह ने बताया कि 2004 में मेरी पहली कहानी 'वागर्थ' में छपी थी। पाठकों ने उसे हाथों हाथ लिया था। देश की लगभग सभी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में मेरी कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। मेरे पाठकों की संख्या भी ज्यादा है। मैंने कभी संघर्ष नहीं किया। कुणाल के मुताबिक हिंदी हमें इसलिए प्रिय है, क्योंकि यह शायद एकमात्र भाषा है, जो किसी दूसरी भाषा से बैर नहीं करती। इसमें उर्दू, अरबी, संस्कृत, अंग्रेजी और यहां तक कि पुर्तगाली भाषा के शब्द भी मिल जाएंगे। हिंदी के भविष्य को लेकर कुणाल सिंह आशावादी हैं। उनका कहना है कि हिंदी भाषा कभी मरने नहीं वाली।

स्पेनिश से गहरा लगाव रखने वाले कहानीकार कुणाल सिंह ने मार्केज, बोलान्यो का साहित्य खूब पढ़ा है। इंतजार हुसैन को दुनिया का सबसे बड़ा किस्सागो मानने वाले कुणाल का कोई तयशुदा मुकाम नहीं है, इसलिए उनमें संभावनाएं अपार हैं। उनसे अभी कई महत्वपूर्ण रचनाएं अपेक्षित हैं।

रविन्द्र कालिया कथा कथेतर सम्मान चर्चित साहित्यकार और संपादक रविंद्र कालिया जी के सम्मान में शुरू किया गया है। कहकशां फाउंडेशन इसे संचालित करता है।

किसानों के लिए मददगार साबित होगी नैनो यूरिया

सबसे पहले मैं यह जानना चाहूंगी कि यूरिया के क्या फायदे हैं और क्या नुकसान हैं?

मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि यूरिया एक जहरीला ठोस कार्बनिक यौगिक है। यह रंगहीन, गंधहीन सफेद और दानेदार होता है। इसका रासायनिक सूत्र $CO(NH_2)_2$ होता है। यह पानी में आसानी से घुलनशील होता है। इसका मुख्य उपयोग खेती–बाड़ी में नाइट्रोजन युक्त उर्वरक के रूप में प्रयोग किया जाता है। यूरिया के अंदर 46 प्रतिशत नाइट्रोजन होती है, जो पौधों की वनस्पति बढ़वार के लिए बहुत जरूरी होती है। यूरिया से मृदा की जो उर्वरा शक्ति है उसको बनाए रखा जा सकता है और बढ़ाया जा सकता है। साथ ही यूरिया का जो उपयोग है मुख्यत प्रदूषण नियंत्रण के रूप में भी करते हैं। आजकल प्लास्टिक इंडस्ट्रीज में भी इसका बहुत इस्तेमाल किया जाता है। कुछ फार्मास्युटिकल कंपनी हैं उनके अंदर भी मेडिसिंस के रूप में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

आप सभी जानते हैं कि यूरिया का प्रयोग करने से हमें बहुत फायदे मिलते हैं, लेकिन अगर यूरिया का हम आवश्यकता से ज्यादा इस्तेमाल करेंगे तो नुकसान भी होते हैं। जैसा कि हम लोग आवश्यकता से ज्यादा यूरिया का इस्तेमाल करेंगे तो मिट्टी, पानी और हवा में प्रदूषण बढ़ जाएगा। साथ ही ज्यादा उर्वरकों का प्रयोग करेंगे तो फसल में इंसेक्ट और डिजीज का अटैक ज्यादा होगा। वातावरण को बहुत ज्यादा नुकसान होगा। ऐसे में मैं यह कहना चाहूंगा कि यूरिया का प्रयोग एक सही मात्रा में सही समय पर और जितनी आवश्यकता हो, उतना ही करें, नहीं तो यह हमें फायदे की जगह नुकसान भी पहुंचाती है।

अब आपसे यह जानना चाहूंगी कि नैनो यूरिया लिक्विड क्या है और इसे कहां विकसित किया गया था?

लिक्विड नैनो यूरिया स्वदेशी रूप से निर्मित एक तरल उर्वरक है, जो पौधों को आवश्यक नाइट्रोजन प्रदान करती है। नैनो का मतलब होता है–100 नैनोमीटर इसका पार्टिकल साइज होता है, जो काफी लंबे सरफेस एरिया को कवर करता है। इससे नाइट्रोजन के इस्तेमाल करने पर प्रभाव बढ़ जाती है और नैनो यूरिया को सर्वप्रथम बनाने वाली कंपनी की अगर मैं बात करूं तो नैनो यूरिया गुजरात के कलोल में इफको ने नैनो बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर एनबीआरसी में विकसित किया था। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर रमेश वालिया ने इसको तैयार किया था।

यूरिया के बारे में भी जान लिया और नैनो यूरिया लिक्विड क्या है इसके बारे में भी जान लिया। अब मैं चाहूंगी कि आप हमें यह बताएं कि इन दोनों में अंतर क्या है ?

सिंपल यूरिया और नैनो यूरिया में जो अंतर है। यह तो नाम से ही सीधा जाहिर होता है कि नैनो यूरिया का मतलब है कि इसके जो पार्टिकल साइज हैं वह 100 नैनोमीटर साइज के होते हैं। यानी कि बहुत ही बारीक साइज होती है, जिससे काफी लंबा एक्सप्रेस एरिया लेती है। इससे इसकी नाइट्रोजन इस्तेमाल करने की दक्षता काफी बढ़ जाती है, जबकि जो ग्रेन्यूल्स यूरिया होता है वह प्लेट्स फॉर्म में होता है। दानेदार होता है। इसके अंदर जो नाइट्रोजन की मात्रा होती है वह 46 प्रतिशत होती है। जबकि नैनो यूरिया में चार प्रतिशत नाइट्रोजन पाया जाता है।

नैनो यूरिया लिक्विड के क्या–क्या फायदे हैं?

नैनो यूरिया का प्रयोग करने से हमारी नाइट्रोजन की दक्षता बढ़ जाती है। जैसे कि यूरिया की अगर मैं बात करूं तो ग्रेन्यूल यूरिया के खेतों में किसान प्लांट ऑब्जर्ब कर पाते हैं। अगर नैनो यूरिया का वह फोलियर स्प्रे करते हैं तो उसके जो नाइट्रोजन की दक्षता है वह 85 से 90 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। जिससे किसानों को ज्यादा फायदा मिलता है। जिससे प्लांट्स न्यूट्रिएंट का अब्जॉर्प्शन ज्यादा कर पाते है। हमने बहुत सारे ट्रायल्स किए और हमने लगाकर देखे हैं। उसमें यह निकलकर आया है कि अगर नैनो यूरिया का इस्तेमाल करते हैं तो हमारी फसल की पैदावार आठ प्रतिशत तक ज्यादा मिलती है। साथ ही नैनो एरिया की लागत भी किसान को कम आती है और जो हमारी मिट्टी और हमारा जल है वह काफी प्रदूषित हो रहा था। उसमें भी हमें काफी फायदा मिलता है। इसका साइड इफेक्ट नहीं होता। किसी तरह के फसल पर और पर्यावरण पर यह पूर्णत इको फ्रेंडली है। इसके लिए ट्रांसपोर्टेशन और स्टोरेज के लिए भी हमें बहुत ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती तो सही मायने में किसानों के लिए नैनो एरिया बहुत ही अच्छा अल्टरनेट सोर्स है ग्रेन्यूल्स यूरिया के मुकाबले।



डीसीएम श्रीराम केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स के सीनियर एग्रोनॉमिस्ट डॉ. कैलाश चंद नेहरा पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता की छात्र निहारिका ने नैनो यूरिया सहित अनेक बिन्दुओं पर उनसे बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

नैनो यूरिया का प्रयोग कैसे करते हैं और किसान यदि इसका प्रयोग करना चाहे तो वह कैसे इसका इस्तेमाल कर सकते हैं?

मैं आपको उसका क्रॉप वाइज शेड्यूल बताना चाहूंगा कि नैनो यूरिया को आप किस तरह से इस्तेमाल करें। जैसे जो सीरियल फसल है जैसे गेहूं है, दाल वाली फसले हैं, ऑयल सीड वेजिटेबल्स हैं। उनमें अगर हमें नैनो यूरिया का छिड़काव करना है तो हमें 30 से 35 दिन के बाद में करना है या रोपाई के 30 से 35 दिन पर और दूसरा छिड़काव उसी के 50 से 60 दिन पर रोपाई के बाद में और अगर तीसरे छिड़काव की जरूरत पड़ती है तो फसल की ड्यूरेशन को देखते हुए करें। उसको नाइट्रोजन की आवश्यकता है, उसके आधार पर करना है। लेकिन यह जरूर है कि अगर आपको इसकी डोज है। वह आपको फिक्स रखने हैं। दो से तीन मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से और एक एकड़ में जो हमें पानी लेना है किसान भाइयों वह 100 से 125 लीटर के हिसाब से पानी लेकर इसका छिड़काव करें। इसके एप्लीकेशन सभी तरह की फसलों में किया जा सकता हैं। आलू की फसल है, कपास है, शुगर केन है और फल वाली फसले हैं या कोई प्लांटेशन क्रॉप है। उसके अंदर भी हम लोग इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। कम से कम दो छिड़काव जरूरी हैं, लेकिन अगर आवश्यकता हो तो आप तीसरा छिड़काव भी कर सकते हैं।

मैं चाहूंगी कि आप यह बताएं कि इसकी लागत क्या है?

500 एमएल में दो एप्लीकेशन में डालना है तो लगभग 450 रुपए प्रति एकड़ का खर्च आएगा, लेकिन उसके साथ अगर हम लोग सिंपल यूरिया डालते हैं। आम तौर हम दो बैग डालते हैं। उसकी लागत किसान को लगभग 500 रुपए आती है। भारत सरकार के सब्सिडी के बारे में बात करूं तो लगभग 2000 रुपए प्रति बैग के हिसाब से यानी कि 4000 रुपए की लागत आती है तो इससे किसान को बहुत पैसे की बचत होगी।

हम इसको पेस्टीसाइड के साथ मिलकर किस प्रकार से उपयोग कर सकते हैं ?

जैसा कि आप जानते हैं यूरिया ग्रेन्यूल होता है। आप उसे खड़ी फसल में फेंकते हैं। लेकिन अगर आप नैनो यूरिया का इस्तेमाल कर रहे हैं। खड़ी फसल में दो छिड़काव या तीन छिड़काव कर रहे हैं। इस समय हमारी फसल में किसी तरह का इंसेक्ट्स या कोई बीमारी आ रही है तो उसके लिए हमें कोई भी कीटनाशक को इसके साथ मिलाकर छिड़काव करना है। आप नैनो यूरिया के साथ इसमें आसानी से मिलकर उसका छिड़काव कर सकते हैं। छिड़काव करने से हमें दो फायदे होंगे कि हमें अतिरिक्त मजदूरों की मजदूरी बचेगी। अगर हम इंसेक्टिसाइड या फफूंदनाशक का छिड़काव करेंगे उसके लिए अलग से मजदूरी करने की जरूरत नहीं है। उसके साथ करके मिक्स कर सकते हैं। कुछ फंगीसाइड या इंसेक्टिसाइड ऐसे होते हैं, जिनको कई बार नहीं मिक्स कर सकते। मैं सभी किसानों को यह सलाह देना चाहूंगा कि आप मिक्स करने से पहले उसका एक जार टेस्ट कर लें। दोनों को अलग–अलग सॉल्यूशन में घोलें और आपस में मिक्स कर लें। उसमें जो कीटनाशक नैनो यूरिया के मिलने के बाद में फटता नहीं है या नीचे बैठता नहीं है। इसका मतलब किसी तरह का उसमें रिएक्शंस नहीं हो रहा तो वह आपके फसल में छिड़काव करने के लिए सुरक्षित है। आप छिड़काव कर सकते हैं।

नैनो यूरिया को लेकर भविष्य की क्या संभावना है?

भारत सरकार और सभी यूनिवर्सिटी और इफको काफी तेजी के साथ इस पर काम कर रही है। यह मानकर चलें कि नैनो यूरिया में काफी ज्यादा दक्षता है। यह भारतीय कृषि में या पूरे राष्ट्र में कृषि में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला उर्वरक है। उर्वरकों में अगर मैं बात करता हूं तो इससे किसान के कृषि क्षेत्र में तो सुधार होगा ही। साथ ही उसकी आय में वृद्धि होगी। उसकी लागत कम होगी और उसका उत्पादन अधिक होगा। जब उत्पादन अधिक होगा तो ऑटोमेटेकली किसान कुशल और समृद्ध होगा। इसके लिए भारत सरकार और इफको मिलकर काफी फार्मर फील्ड लेवल पर भी काम कर रही है। किसानों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ रही है। किसान अब धीरे–धीरे इसका इस्तेमाल करना चालू कर रहे हैं। मैं और बताना चाहूंगा कि किसानों ने नेट से छिड़काव या पावर पंप से छिड़काव करने के साथ–साथ अभी भारत में सरकार ड्रोन लेकर आ रही है तो ड्रोन से भी छिड़काव करना चालू कर दिया है। इससे किसानों की लागत कम हो रही है और उसमें कम पानी पर भी छिड़काव हो रहा है।

कुछ फसलें ऐसी हैं जिसके अंदर किसानों को छिड़काव करने में बड़ी तकलीफ होती है, क्योंकि प्लांट हाइट बहुत ज्यादा होती है। इसमें गन्ने की फसल मुख्य है। उसके अंदर किसान छिड़काव नहीं कर पा रहा था। लेकिन जब से ड्रोन की सुविधा आई है तब से कुछ किसान ड्रोन से छिड़काव कर रहे हैं। जिसमें आराम से उनको न्यूट्रिएंट्स का फायदा मिल पा रहा है। कम लागत में बहुत अच्छा फायदा मिल रहा है। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा एक लाइन बोलना चाहूंगा कि नैनो लिक्विड यूरिया विकास के साथ–साथ ही भारत की कृषि जरूरत को पूरा करने के लिए एक स्वस्थ, समृद्ध और टिकाऊ भविष्य की ओर अग्रसर है। किसानों को इसमें रुचि लेनी चाहिए।

स्पिक मैके का इरादा भारतीय विरासत को बढ़ाना

स्पिक मैके ने पांच दिवसीय 'विरासत' का आयोजन किया, युवाओं को भारतीय संस्कृति व शास्त्रीय संगीत के प्रति जागरूक किया



विरासत में हिस्सा लेने पहुंचे प्रसिद्ध गायक पंडित भुवनेश कोमकली के साथ प्राचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी।

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की समिति स्पिक मैके ने पांच दिवसीय कार्यक्रम 'विरासत' का आयोजन किया। इसमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता की झलक देखने को मिली। पांच दिवसीय समारोह में सांस्कृतिक नृत्य, हेरिटेज वॉक, शास्त्रीय संगीत, आध्यात्मिक वार्ता और फिल्म देखने को मिली।

विरासत की शुरुआत नृत्यांगना रागिनी चंद्रशेखर की प्रस्तुति से हुई। रागिनी चंद्रशेखर ने कहा नृत्य की अपनी एक अलग भाषा है, नृत्य को देखकर यह साफ अनुभव किया जा सकता है। उन्होंने अपनी नृत्य कला के माध्यम से तीन प्रकार के नृत्य प्रस्तुत किए। इसमें पहला नृत्य शिव और विष्णु भगवान से संबंधित था। दूसरा राधा और कृष्ण से और तीसरा एक व्यक्ति के महिला के प्यार में पड़ जाने से संबंधित था। रागिनी के साथ वाद्य यंत्रों पर गायत्री सेठ, के. वेंकटेश्वरन, रोहित प्रसन्ना और एमवी चंद्रशेखर मौजूद रहे।

दूसरे दिन हेरिटेज वॉक में विद्यार्थियों को कुतुब मीनार के इतिहास और वास्तु कला के बारे में बताया गया। प्रसिद्ध इतिहासकार और दिल्ली की सांस्कृतिक विरासत की विशेषज्ञ डॉ. स्वपना लिडल ने हेरिटेज वॉक का नेतृत्व किया। डॉ. स्वपना ने विद्यार्थियों को कुतुब मीनार के इतिहास से अवगत कराया। उसके बारे में बात करते हुए उन्होंने बताया कि इस मीनार की नींव कुतुबुद्दीन ऐबक ने रखी थी, लेकिन वह सिर्फ पहली मंजिल का ही निर्माण करवा पाया, जिसे बाद में इल्तुतमिश और अलाउद्दीन खिलजी ने पूरा करवाया। मोहम्मद बिन तुगलक ने इसका पुन. निर्माण कराया। इसी के कारण ऊपर का हिस्सा सफेद संगमरमर से बना है। इस मीनार के वास्तु कला के बारे में उन्होंने बताया कि इसकी दीवारों पर गंगा और यमुना नदी को तराशा गया है। साथ ही इस मीनार के चारों ओर फूल बेलों की बेल्ट बनी है, जिसमें फूल बेलों के साथ कुरान की आयतों को उकेरा गया।



नृत्यांगना रागिनी चंद्रशेखर

तीसरे दिन मुख्य गायक के रूप में पंडित भुवनेश कोमकली मौजूद रहे, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्कृष्ट गायक माने जाते हैं। उन्हें उस्ताद बिस्मिल्लाह खां सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है। उनका साथ निभाया चेतन निगम ने, जो हारमोनियम में प्रतिष्ठित हैं। तबले में पारंगत शंभूनाथ भट्टाचार्य उनके साथ रहे। आनंद पाठक और प्रशांत कुमार तानपुरा पर रहे। गायकी में साथ क्षितिज माथुर ने दिया। इस सत्र में पंडित भुवनेश कोमकली ने प्रकृति की महत्ता संगीत में क्या है, यह समझाने के लिए एक उदाहरण दिया कि चंदन पर फूल भले न आते हों, महकता तो फिर भी है। गुलमोहर और अमलतास के फूलने का अपना समय है।

चौथी कड़ी में आध्यात्मिक वार्ता का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता ब्रह्मकुमारी रमा ने बताया कि आज के युवा अपना आत्मविश्वास जल्दी खो देते हैं। आध्यात्मिकता और ध्यान के छोटे–छोटे कदमों से उन्हें प्रोत्साहित करना एक समाधान हो सकता है। उनका कहना था कि जो हमारे पास नहीं है उसका दुख हमें हमेशा घेरे रहता है. लेकिन हमारे पास जो है उससे हम कभी खुश नहीं होते। यही वह विचार हैं, जो तनाव और चिंता को जन्म देते हैं। इसका परिणाम नकारात्मकता के रूप में देखने को मिलता है। उन्होंने बताया कि कैसे आधुनिकता की आपाधापी और तनाव में लोग आध्यात्मिक संतुलन खोते जा रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने आंतरिक शांति प्राप्त करने के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने उपस्थित लोगों को बताया कि किस प्रकार ध्यान और आत्म अनुशासन के माध्यम से आंतरिक शांति प्राप्त की जा सकती है। कैसे आध्यात्मिकता हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है और तनाव से राहत दिलाने में मदद कर सकती है।

इसी दिन हिंदी फिल्म 'खंडहर' का प्रदर्शन निर्माता मतीन अहमद के नेतृत्व में किया गया। मतीन अहमद ने कहा कि जिंदगी का अगर एक तिहाई हिस्सा निकाल दें तो हम अपनी जिंदगी के जितना ही दुनिया को देखते हैं। जितना आप देखते हैं उससे हजार गुना ज्यादा आप सुनते हैं। जन्म लेने से छह महीने पहले ही हम सुनना शुरू कर देते हैं। खंडहर फिल्म में मुख्य कलाकार के रूप में नसीरुद्दीन शाह और शबाना आजमी थे। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह ने सुभाष और शबाना आजमी ने जमीनी का किरदार निभाया। खंडहर अंग्रेजी में मृणाल सिंह ने निर्देशित की थी। 1984 की भारतीय हिन्दी भाषा की यह फिल्म है, जो प्रेमेंद्र मित्रा की बंगाली कहानी पर आधारित है।

पांच दिवसीय 'विरासत' का समापन बांसुरी वादक पंडित राजेंद्र प्रसन्ना की प्रस्तुति के साथ हुआ। 15 मार्च को हुए इस समापन समारोह में उनके साथ तबले पर अभिषेक मिश्रा और तानपुरा पर शहजाद राशिद मौजूद थे। तबले के साथ बांसुरी की आवाज इतनी मोहक थी कि लोग उसमें खो से गए। सवाल जवाब के सत्र में पंडित राजेंद्र प्रसन्ना ने शास्त्रीय संगीत की बारीकियों को समझाया। समिति की संयोजक डॉ. दीप्ती भारद्वाज और सलाहकार प्रो. राकेश कुमार की सक्रियता से यह पांच दिवसीय आयोजन संपन्न हुआ। समिति अध्यक्ष अजरा फयाज सहित सभी सदस्यों की सक्रियता से आयोजन में चार चांद लगे। हर रोज आयोजन में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता सहित बड़े पैमाने पर शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रस्तुति : विशाल यादव, प्रियांशु, दिव्या, खुशी शाक्या, सोनिका

'हसरतें' ने नाट्यकला की बारीकियों पर किया काम



कार्यशाला में शामिल हुए प्रतिभागी व तखलीक थियेटर ग्रुप के सदस्य।

अभिषेक चौहान

नई दिल्ली। जो व्यक्ति हर किरदार निभाता है, उसे अभिनेता कहते हैं और इसी अभिनय को निखारने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय की ड्रामा समिति 'हसरतें' ने तखलीक ग्रुप ऑफ थिएटर के साथ मिलकर चार दिन की थिएटर कार्यशाला का आयोजन कराया। इस कार्यशाला का नेतृत्व तखलीक थिएटर ग्रुप के फाउंडर अनिंदय कालरा ने किया, जो एक्टर, निर्देशक, संगीतकार और एक लेखक भी हैं। अनिंदय कालरा के साथ प्रतिभागियों का मार्गदर्शन काजल रावत, कौशल कुमार और उज्मा फैज ने किया। थिएटर वर्कशॉप में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें पहले दिन ध्यान केंद्रित करना और वॉर्मअप के लिए व्यायाम की कक्षा आयोजित की गई। दूसरे दिन भावनाओं में विविधता लाने के बिन्दु पर बात हुई। इसी के साथ तीसरे दिन नाटक लेखन, नृत्य कक्षाएं और नाटक प्रस्तुत करने का रहा।

कार्यशाला के पहले दिन के सत्र में विद्यार्थियों को मंच की जटिलताओं और इसकी कार्यप्रणाली से परिचित कराया गया। कार्यशाला स्फूर्तिदायक शारीरिक गतिविधियों के साथ शुरू हुई। वोकल अभ्यास पर ध्यान दिया गया, जो आवाज की स्पष्टता और अनुनाद को परिष्कृत और बढ़ाने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया। नाट्यशाला के दूसरे दिन पटकथा और चरित्र विकास के पीछे के शोध मनोविज्ञान पर गहराई से चर्चा की गई। इसके बाद समिति के सदस्यों को छह के समूहों में विभाजित किया गया और प्रेमचंद, सआदत हसन मंटो से लेकर फ्रांज काफ्का जैसे महान लेखकों के छह नाटकों पर काम करने का दायित्व सौंपा गया।

नाट्यशाला के तीसरे दिन मंच पर उपस्थिति को बढ़ाने के लिए सेट डिजाइन किया गया। अभ्यास और गतिविधियों की एक श्रृंखला के साथ शुरुआत की गई। फिर कार्यशाला में प्रत्येक समूह की पहले से सौंपी गई कहानियों पर ध्यान दिया गया, जिनकी विशिष्ट रूप से व्याख्या की गई। परिणाम स्वरूप स्क्रिप्ट और दृश्य विभाजन का निर्माण हुआ। मंच के आयामों, विभिन्न शब्दावली और प्रकाश जैसे उपकरणों की खोज की। उनके उपयोग पर चर्चा की और संगीत और प्रकाश एक दृश्य को कैसे बढ़ा सकते हैं। चरित्र विकास और स्क्रिप्ट परिशोधन पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका समापन दिन के अंत तक एक स्क्रिप्ट के पूरा होने और निर्देशन सिद्धांतों की बुनियादी समझ के साथ हुआ।

यह नाट्यशाला हसरतें समिति की अध्यक्ष सिमरन अरोड़ा के सानिध्य में आयोजित की गई। उन्होंने बताया कि इस आयोजन से हम लोगों को काफी कुछ सीखने को मिला।

भविष्य के लिए जल संरक्षण करना होगा

राहुल गुप्ता

नई दिल्ली। आने वाले भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें आज से ही जल संरक्षण का संकल्प लेना होगा। जल संरक्षण ही आने वाला कल सुनहरा बनाएगा। यह बात राष्ट्रीय सेवा योजना की 8 मार्च को आयोजित कार्यशाला के दौरान दिल्ली जल बोर्ड के सेवानिवृत्त अतिरिक्त मुख्य अभियंता राम किशोर सिंघल ने कही।

राष्ट्रीय सेवा योजना ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में जल संरक्षण के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा ने मुख्य वक्ता राम किशोर सिंघल को पौधा देकर स्वागत किया। कार्यशाला में जल को दूषित करने के स्रोत पर बात की गई।

उन्होंने दैनिक जीवन में पानी के इस्तेमाल के बारे में बताया कि जब आप ब्रश करते हैं तब नल को बंद रखकर पानी बचा सकते हैं। उन्होंने घरेलू कार्य करने में जल की बर्बादी को रोकने के लिए उपाय बताया। सरकारी स्तर पर जल संरक्षण के उपाय बताए। उन्होंने बरसात, जमीनी स्तर पर जल सरंक्षण और जल की खपत के बारे में वार्षिक आंकड़े प्रस्तुत किए।





माइक्रोबायोलॉजी विभाग के वार्षिकोत्सव में प्रो. विजय कुमार चौधरी ने रखे विचार (दाएं) और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया (बाएं)।

माइक्रोविटे 24 में जीन थेरेपी पर विमर्श

शिवांश सक्सेना/संजीव राज

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने दो दिवसीय वार्षिकोत्सव का आयोजन किया। इसकी थीम जीन थ्योरी रखी गई थी। इस आयोजन का शुभारंभ 15 फरवरी को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने किया। शुरुआत करते हुए उन्होंने माइक्रोबायोलॉजी विभाग के इतिहास को याद किया।

मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद प्रो. विजय कुमार चौधरी और प्रो. अमित गुप्ता के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के विकास में दिए गए योगदान के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रो. विजय कुमार चौधरी के योगदान को रेखांकित करते हुए बताया कि राम लाल आनंद महाविद्यालय की लाइब्रेरी उन्हीं की दूरदर्शिता का परिणाम है। इसके बाद प्रो. विजय कुमार चौधरी ने बच्चों को हार्नेसिंग पावर आफ एंटीबॉडीज के बारे में बताया।

उन्होंने बच्चों को एंटीबॉडीज के प्रकार और उनकी संरचना के बारे में बताते हुए सांप के डंक के उपचार में लाए जाने वाले एंटीबॉडीज के निर्माण के प्रक्रिया के बारे में भी बताया। प्रो. अनीता गुप्ता ने बच्चों को मॉलेक्युलर डायग्नोस्टिक्स ऑफ ड्रग रेजिस्टेंस बैक्टीरिया के विषय के बारे में बताया। उन्होंने बैक्टीरिया के ड्रग रेसिस्टेंट बनने के कारणों के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया। इस वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों के लिए पोस्टर प्रेजेंटेशन, आइडिया प्रेजेंटेशन, क्विज और वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान भास्कराचार्य महाविद्यालय की रिया चौहान को मिला। द्वितीय स्थान राम लाल आनंद महाविद्यालय के अंकुश कुमार और पीजीडीएवी (इव. निंग) महाविद्यालय के शरण्यम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। आइडिया प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की छात्रा मनस्वी आचार्य और इंगिता डे मुंशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। राम लाल आनंद महाविद्यालय की छात्रा प्रियंका शर्मा और दिव्या वर्मा रनर अप रहीं।

पोस्टर प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में डीटीयू की आशी बरवाल और श्रृष्टि सतिजा ने जीत हासिल की। रनर अप राम लाल आनंद की प्रियंका और दिव्या रहीं। क्विज प्रतियोगिता में भास्कराचार्य कॉलेज के शाश्वत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान गार्गी कॉलेज की दृष्टि को मिला। राम लाल आनंद के शिवांश ने तृतीय स्थान हासिल किया।

इन प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल की भूमिका माइक्रोबायोलॉजी विभाग की शिक्षक प्रो. प्रेरणा दीवान, डॉ. शालिनी स्वामी, डॉ. निधि वर्मा, डॉ सुनीला हुड्डा और डॉ. निधि चंद्रा ने निभाई। इसमें विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया गया।

पट्टचित्र में विद्यार्थियों ने बिखेरे कला के रंग

श्वेता सिंह

नई दिल्ली। उड़ीसा को पट्टचित्र कला का केंद्र माना जाता है। पट्टचित्र कपड़ों पर की जाने वाली एक ऐसी कला है, जिसमें समृद्ध रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। उसके माध्यम से सामान्य विषयों को प्रदर्शित किया जाता है। इसी पट्टचित्र कला की कार्यशाला का आयोजन राम लाल आनंद महाविद्यालय की स्पिक मैके सोसाइटी ने सेमिनार कक्ष में आयोजित किया।

2 से 6 फरवरी तक आयोजित इस पट्टचित्र कार्यशाला में विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक और डिजाइन के माध्यम से राधा, श्रीकृष्ण, गणेश और भगवान विष्णु की प्रतिमा का चित्रण किया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को पट्टचित्र कला से अवगत कराना था। सभी ने खूबसूरती के साथ पट्टचित्र कला के माध्यम से कागज पर चित्रण कर भारत की प्राचीन विरासत को प्रकट किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्णचंद्र मोहना मौजूद रहे, जिन्हें पट्टचित्र पेंटिंग में 25 साल का अनुभव है। इस पेंटिंग में उत्कृष्टता के लिए वह राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं। संयोजक के रूप में डॉ. दीप्ति भारद्वाज और प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता सहित सोसा. इटी के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

पुष्प प्रदर्शनी से महक उठा दिल्ली विवि

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय उद्यान समिति ने स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग (एसओएल) के संयुक्त तत्वावधान में नार्थ कैम्पस स्थित गौतम बुद्ध शताब्दी उद्यान में 66वीं पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन 1 मार्च को किया। इस बार की थीम महिला सशक्तिकरण 'स्त्री और प्रकृति संवर्धन : सहकारिता एवं शाश्वत विकास का उत्सव' रखी गई थी।



प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि फूल जीवन को प्रेरणा देते हैं, लेकिन अगर उनमें खुशबू न हो तो वह अच्छे नहीं लगते। इसी तरह से हमारा जीवन है। हमारे जीवन में अच्छाई, अपनेपन और मूल्यों की खुशबू होती है। लेकिन अगर व्यक्ति के जीवन में अपनापन और दूसरों के लिए अच्छा करने की चाह नहीं होगी और मूल्य नहीं होंगे तो वह जीवन निरर्थक है। 10 साल बाद राष्ट्रपति भवन ने भी कार्यक्रम मे भाग लिया और स्टॉल का प्रदर्शन किया।

राष्ट्रपति भवन से आए लाल गोभी के ऊपर बैगन के फूल और नीचे आलू जैसे अनेक शानदार सब्जियों की किस्मों को पेश किया गया। इसमें भेजी गई सब्जियों और ट्यूलिप के फूलों ने लोगों का ध्यान खींचा। पौधों को संवारने वालों की मेहनत गार्डन में छाई हुई थी, जिसे दर्शकों ने सराहा।

गेंदा, गुलाब, ट्यूलिप, डेहलिया जैसे फूलों की विभिन्न प्रजातियों से गार्डन महक उठा। इसमें विभिन्न प्रजातियों के करीब 100 पौधों और फूलों को प्रदर्शित किया गया। इसमें विवि से जुड़े अनेक कॉलेजों ने हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में महाविद्यालयों में सर्वोत्कृष्ट हरित प्रथाओ के लिए 'शताब्दी कप' हंसराज कॉलेज को मिला। शो में सर्वाधिक अंक पाने पर कुलपति कप कालीचरण पुरस्कार मिरांडा हाउस को मिला और शो में सर्वाधिक अंक पाने पर दूसरा प्लेटिनम जुबली कप कालीचरण पुरस्कार ग्वायर हॉल को मिला। दरअसल गमले वालें पौधे (पॉप प्लांट) और गुलदस्ते में पुष्प (कट फ्लॉवर) को संख्या, आकार, स्वरूप और गुणवत्ता के आधार पर पुरस्कृत करने का नियम था।

पुष्प प्रदर्शनी में कैक्टस नागफनी ऑर्किड, रसदार, हर्बल पौधे ,डीयू हाट और फूड स्टॉल मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे। फोटोग्राफी, स्टैंडी और स्लोगन लेखन प्रतियोगिता भी हुई। इस अवसर पर नारा लेखन, पुष्प एवं बागवानी से संबंधित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। डीयू के सभी संस्थानों एवं विभागो तथा अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों और उनमें कार्यरत व्यक्तियों को इस पुष्प प्रदर्शनी में आमंत्रित किया गया था। पुष्प प्रदर्शनी को निहारने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थी और शिक्षक बड़ी संख्या में पहुंचे। उन्होंने प्रदर्शनी को निहार कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

शाइनिंग स्टार्स ऑफ आरएलए में चमका विद्यार्थियों का हुनर

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में छात्र संघ ने शाइनिंग स्टार्स ऑफ आरएलए का आयोजन किया। 16 मार्च को हुए इस अंतरा महाविद्यालय टैलेन्ट हंट में कई कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं हुईं। इनमें नृत्य, संगीत और कविता पाठ की प्रतियोगिताएं शामिल थीं। प्रतियोगिता की शुरुआत दस्तूर टीम की संगीतमय गीत की प्रस्तुति से हुई। संगीत प्रतियोगिता में ग्रासरूट की टीम ने अपनी प्रस्तुति से आगे के प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

काव्य पाठ में प्रतिभागियों ने रामधारी सिंह 'दिनकर' से लेकर आधुनिक कवियों की कविताओं को सुनाया। अंतरदृष्टि ने अपनी टीम के साथ सांस्कृतिक नृत्य पेश किया। रैप सांग में भी कॉलेज के रैपरों ने मौका नहीं छोड़ा। संजीव राज और राजकुमार ने रैप संगीत की प्रस्तुति दी। इससे वहां जमा लोग तालियों के साथ उनका उत्साह बढ़ाया।

काव्य पाठ प्रतियोगिता के परिणाम में अंकुश कुमार, संगीत में निखिल पाण्डेय, नृत्य में आर्यन और भूमि ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। रैप सांग में राजकुमार अव्वल रहे। सभी विजेताओं को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

अन्य प्रतिभागियों में कुछ को स्पेशल मेंशन और शेष को प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के समापन में विद्यार्थियों ने हिन्दी, पंजाबी और हरियाणवी गानों पर धमाल मचाया। इससे पहले कॉलेज के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चंद्र डबास ने कहा कि इस प्रकार का टैलेंट हंट कॉलेज में छुपे कलाकारों को पहचानने और उनकी प्रतिभा को साझा करने का अवसर देता है। उन्हें इसका लाभ उठाना चाहिए। निर्णायक मण्डल के रूप में कई विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे।

विविधता की एकता के बदलाव का आग्रह

'संस्कृतियों में परिवर्तन : एक उपमहाद्वीपीय अनुभव' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

उत्कर्ष

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में इतिहास विभाग ने दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार का विषय 'संस्कृतियों में परिवर्तन : एक उपमहाद्वीपीय अनुभव' रखा गया था, जिसमें देश और विदेश के इतिहासकारों एवं शोधार्थियों ने हिस्सा लिया। महाविद्यालय में 1 और 2 मार्च को हुए इस आयोजन में प्रतिदिन चार सत्र हुए।

उद्घाटन सत्र के दौरान प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने युवाओं के साथ संस्कृति पर चर्चा करने की आवश्यकता पर जोर दिया। साथ ही विविधता में एकता के स्थान पर विविधता की एकता के बदलाव का आग्रह किया। पहले सत्र में डॉ. आरसी प्रधान, प्रो. जियानलुईगी सेगालेरबा और डॉ. अपर्णा धीर खंडेलवाल के नेतृत्व में भारतीय दर्शन के विविध पहलुओं पर चर्चा की गई। इसमें जीवन के कर्मों और उसके बाद के जीवन पर ध्यान केंद्रित किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की अध्यक्ष रहीं प्रो. सीमा बावा, डॉ. संध्या शर्मा, डॉ. प्रतीक कुमार, डॉ. प्रेम कुमार आदि ने साहित्यिक संस्कृतियों पर चर्चा की। इसमें स्थानीय साहित्य के बारे में धारणाएं, द्वारका और कृष्ण के पुरातात्विक साक्ष्य और सांस्कृतिक सम्मेलन पर नाटकों के प्रभाव के बारे में बताया गया। प्रो. सीमा बावा और डॉ. दीप्ति भारद्वाज ने आधुनिक कला, प्रतिभा विज्ञान और मकबूल फिदा हुसैन की पेंटिंग पर बात की।

दूसरे दिन का विषय प्रमुख संस्कृतियों पर केन्द्रित था, जिसमें डॉ. विकास कुमार वर्मा ने बिहार के मिथिला प्रांत की लोक संस्कृति सामो चकवा और चुंगला से अवगत कराया। डॉ. सतेन्द्र कुमार पांडे ने भारत में बौद्ध संस्कृति पर अपनी बात रखी। डॉ. भुवन झा ने पंडित मदन मोहन मालवीय की संस्कृति पर विचार रखे तो डॉ. रजीउद्दीन अकील ने परम्पराओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ जयराम सिंह सहित कई और लेखकों व् शोधार्धियों ने भी अपने विचार रखे।

इससे पहले सेमिनार संयोजक डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी ने संस्कृति की अवधारणा बताते हुए पूरे आयोजन की रूपरेखा के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के निर्देशन में पूरा आयोजन किया गया है। महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. राजीव कुमार, शिक्षक प्रो. राकेश कुमार, डॉ. शची मीणा ने अलग–अलग सत्रों के संचालन और धन्यवाद ज्ञापन में अपनी भूमिका निभाई। दोनों दिन बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

टीम हर्षित ने आईपीएल नीलामी का खिताब जीता

दीपक कुमार

नई दिल्ली। भारतीय हरफनमौला खिलाड़ी हार्दिक पांड्या आरएलए आईपीएल नीलामी में सबसे महंगे खिलाड़ी बने। इन्हें टीम भविष्य ने 16.5 करोड़ रुपए में खरीदा। अर्थशास्त्र विभाग ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में आईपीएल नीलामी प्रतियोगिता का आयोजन करवाया। इसमें सभी टीमों को कुल 60 करोड़ रुपए का पर्स दिया गया।



खिलाड़ियों को अलग अलग रेटिंग दी गई, जिस टीम के सर्वश्रेष्ठ 11 खिलाड़ियों का कुल रेटिंग सबसे अधिक आया उन्हें प्रथम स्थान मिला। इस आधार पर शहीद भगत सिंह महाविद्यालय की टीम हर्षित और महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय की टीम यश की कुल रेटिंग 761 थी, लेकिन अपनी पर्स में अधिक बजट होने के कारण टीम हर्षित ने इस प्रतियोगिता को जीत लिया। टीम यश को दूसरा स्थान मिला। हंसराज महाविद्यालय की टीम आदित्य 758 रेटिंग के साथ तीसरे स्थान पर रही। इन टीमों का चयन ऑनलाइन क्विज के आधार पर हुआ, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया था। इस प्रतियोगिता में पैनल की भूमिका में नरेंद्र, नीतीश, दिनेश, मयंक, राघव और रंजन शामिल थे।

छात्राओं को आत्मरक्षा की तकनीक सिखाए

साक्षी शर्मा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की वूमेन वेलफेयर एडवाइजरी कमेटी ने 5 मार्च 2024 को सेल्फ डिफेंस कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के एम्फीथिएटर में आयोजित किया गया था, जहां अतिथि के रूप में स्वायत्त रक्षा विशेषज्ञ दिल्ली पुलिस कांस्टेबल मौजूद रहे।

कार्यक्रम में महिला कांस्टेबल ने छात्राओं को आत्म रक्षा के महत्व के बारे में बताया। साथ ही विभिन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए व्यावहारिक तकनीकें सिखाईं। सतर्कता और अपने परिवेश से अवगत रहना, आवाज का प्रभावी ढंग से उपयोग करना के साथ साथ कानूनी अधिकारियों और आपातकालीन संपर्क नंबर की जानकारी दी गई।

उक्त कार्यशाला छात्राओं के लिए काफी लाभकारी रही, जिसमें उन्हें आत्मरक्षा के बारे में अनेक महत्वपूर्ण जानकारी मिली, जिससे वह खुद को सुरक्षित रखने के लिए अपने को सशक्त महसूस करेंगी। कार्यशाला में छात्राओं के साथ वूमेन वेलफेयर एडवाइजरी कमेटी की संयोजिका डॉ. सुधा चौधरी, प्रो. नीलम ऋषिकल्प, डॉ. सीमा जोशी, डॉ. कीर्ति पूनिया सहित अनेक शिक्षक और छात्राएं उपस्थित थीं।

संघर्षों और जिजीविषा का उपन्यास है *काँधों पर घर*

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। विश्व पुस्तक मेले में राजकमल जलसाघर में कथाकार प्रज्ञा के लोकभारती से प्रकाशित नए उपन्यास 'काँधों पर घर' का लोकार्पण और गोष्ठी हुई। इसमें वरिष्ठ आलोचक रोहिणी अग्रवाल, वरिष्ठ कथाकार और 'परिकथा' पत्रिका के संपादक शंकर और वरिष्ठ कथाकार भालचंद्र जोशी शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन युवा आलोचक राकेश कुमार ने किया।

'काँधो पर घर' शीर्षक इसी की अभिव्यक्ति है–तुम उजाड़ो मुझे, मैं कांधों पर घर लेकर चलती हूं। प्रज्ञा ने इस उपन्यास में जिस तकनीक का इस्तेमाल किया है वह यथार्थवादी लेखन की तकनीक है। कथा को पात्रों की निजता में नहीं बंधने दिया जाए। पात्र जिन परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं, प्रज्ञा ने उनकी पहचान की है। प्रज्ञा ने पात्रों के माध्यम से सवाल उठाया है। साथ ही वह बड़े सवालों तक गई हैं। 'काँधो पर घर' इस समय का जरूरी उपन्यास है। रोहिणी अग्रवाल ने कहा



कथाकार प्रज्ञा के नए उपन्यास 'काँधों पर घर' का विश्व पुस्तक मेला में विमोचन किया गया।

कि दिल्ली में एशियाई खेलों से लेकर राष्ट्रमंडल खेलों की शुरुआत तक के समय का उपन्यास है 'काँधों पर घर'। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि 21वीं सदी में हम जिस भारत का आगाज करने जा रहे हैं उस भारत को बनाने वाले मेहनतकश लोगों के लिए हम कितना बड़ा दिल रखते हैं। उन्होंने कहा कि इस उपन्यास में प्रज्ञा ने एक तकनीक रची है कि समय और परिवेश नायकत्व तो ग्रहण करते हैं पर उसे ध्वस्त करते हुए एक स्त्री पात्र मसीहा की भूमिका में उठ खड़ी होती है। पूनम को अपने ही राख से बनते हुए इस उपन्यास में मैंने देखा कि कानपुर से दिल्ली आई झुग्गी झोपड़ियों में रहने के बाद अपने मैं के घेरे को विस्तीर्ण करने का काम करती है। इसलिए मुझे यह उपन्यास अच्छा लगा।

दूसरी खासियत यह है कि प्रज्ञा के उपन्यास में रिपोर्टिंग और शोध दोनों हैं, लेकिन उपन्यास की कला यहां से शुरू होती है जब तक रिपोर्टिंग हमारे भीतर सवाल पैदा नहीं करती। यथार्थ का अतिक्रमण करके बेहतर समाज और मनुष्य का स्वप्न नहीं रचती तब तक यह कला नहीं बन पाती, पर जब हम उसे अपने भीतर उतार लेते हैं तो यह सरस्वती की तरह हमारे भीतर प्रवेश करती है।

वरिष्ठ कथाकार शंकर ने प्रज्ञा के पहले के उपन्यासों को रेखांकित करते हुए इस उपन्यास की खासियत के बारे में बताया। कथाकार भालचंद्र जोशी ने कहा कि प्रज्ञा का यह तीसरा उपन्यास 'काँधों पर घर' दिल्ली की यमुना के इर्द–गिर्द घूमती है। कहानी की खूबी है कि इसके अनेक पात्र धीरे–धीरे विकसित होते चलते हैं। इसी से शहर का चरित्र भी खुलकर आता है। उपन्यास में 80 के दशक से नई सदी की शुरुआत तक की कहानी है, जिसके जरिए देश का चेहरा खुलता है। राजनीति का चेहरा खुलता है। कस्बों से महानगर आए लोग किस तरह जीवन संघर्ष करते हैं, इसकी अनेकों कहानियां उपन्यास में हैं।

उपन्यासकार प्रज्ञा ने इस मौके पर कहा कि इस उपन्यास के जरिए मैंने विकास के मॉडल पर मानवीय दृष्टि से सवाल उठाने की कोशिश की है। यह लोग जो फिनिक्स की तरह अपनी राख से सृजित होते हैं, क्या देश इन्हें अपना नागरिक भी मानता है? उन्होंने उपन्यास के आवरण चित्र के लिए चित्रकार अशोक भौमिक का और अपने शहर दिल्ली का आभार व्यक्त किया। दिल्ली पर केंद्रित यह उनका तीसरा उपन्यास है। संचालन कर रहे आलोचक राकेश कुमार ने अपनी छोटी–छोटी टिप्पणियों से भी चर्चा को समृद्ध किया। कार्यक्रम में लेखक शमसुल इस्लाम, नीलिमा शैलेय, गरिमा श्रीवास्तव, रश्मि भारद्वाज, ज्ञानचंद बागड़ी, देवयानी आदि अनेक लेखक व पाठक मौजूद रहे।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

संजीव राज

संपादकीय सहयोग

दीपक कुमार